Dr M.K. Jha
Dept of Sociology
V.S.J College
Rajnagar

B.A - part - II, Sociology 'Hons'
Paper - III, Indian Society

Question - लौकिकीकरण की अवधारणा दीजिए। भारत की परम्परागत धार्मिक-सांस्कृतिक जीवन में परिवर्तन का भूमिका समझाइए।

Answer - अंग्रेजी के शब्द Secularization का अर्थ धर्म-निरपेक्षता समझा जाता है लेकिन एम० एन० श्रीनिवास ने धर्मनिरपेक्षता के बदले लौकिकीकरण शब्द का प्रयोग किया है अतएव अब समाजशास्त्र में अधिकाधिक धर्मनिरपेक्षता के बदले लौकिकीकरण की अवधारणा सामने आयी है।

लौकिकीकरण के अर्थ स्पष्ट करते हुए श्रीनिवास ने लिखा है " लौकिकीकरण का तात्पर्य है जिसे पहले धार्मिक माना जाता था उसे अब वैसा नहीं माना जाता है।" उन्होंने आगे लिखा है कि लौकिकीकरण का एक आवश्यक तत्व बुद्धिवाद (rationalism) अथवा तर्कवाद है जिसमें अनेक दूसरी बातों के अतिरिक्त परम्परागत विश्वासों और विचारों की जगह आधुनिक ज्ञान को प्रधानता दी जाने लगती है। इसका तात्पर्य है कि लौकिकीकरण हमारे धार्मिक जीवन और विश्वासों से सम्बन्धित परिवर्तन की वह प्रक्रिया है जिसमें धार्मिक विश्वासों का स्थान तार्किक व्यवहार लेने लगते हैं। इस प्रक्रिया में धार्मिक विश्वासों की जगह सांसारिक अथवा लौकिक दृष्टिकोण को अधिक महत्व मिलने के कारण ही श्री इसे लौकिकीकरण की प्रक्रिया कहा है।

भारतीय समाज में धर्म का उद्देश्य मोक्ष था पारलौकिक जीवन में प्रवेश करना था अब लौकिकीकरण के कारण धर्म का उद्देश्य मानव कल्याण एवं मानव सेवा समझा जाता है लौकिकीकरण के कारण ब्राह्मणों के स्थान में कमी आयी है। हिन्दू विवाह धार्मिक संस्कार माना जाता रहा है लेकिन अब पारिवारिक जीवन की समस्या मानी जाती है।

Ajanta Oxford

पुराणों और अनेक दूसरे धर्मशास्त्रों में ब्राह्मण को अलौकिक शक्ति पर आधारित काल्पनिक कथाओं को अधिकांश लोग अब धर्म का हिस्सा नहीं मानते हैं। स्पष्ट है कि आज धार्मिक विश्वासों का स्थान लौकिक अथवा लौकिक दृष्टिकोण ने ले लिया है। परिवर्तन की इसी प्रक्रिया का नाम लौकिकीकरण है।

श्रीनिवास के अनुसार

लौकिकीकरण वह प्रक्रिया है जो किसी समाज की धार्मिक संरचना, धार्मिक विश्वासों, पवित्रता और अपवित्रता सम्बन्धी विचारों आदि को अलौकिक संदर्भ में स्पष्ट न करके तार्किक और लौकिक दृष्टिकोण को महत्व दिया जाता है।

भारतीय समाज में लौकिकीकरण से उत्पन्न परिवर्तन - (change due to Secularisation in Indian society)

भारत में लौकिकीकरण की प्रक्रिया लम्बे समय से चली आ रही है लेकिन स्वतंत्रता के बाद इस प्रक्रिया ने भारत की परम्परागत धार्मिक संरचना में व्यापक परिवर्तन कर दिये हैं। श्रीनिवास ने इन परिवर्तनों को पांच मुख्य क्षेत्रों में स्पष्ट किया है जिन्हें निम्नलिखित रूप से समझा जा सकता है जैसे:-

1. पवित्रता तथा अपवित्रता सम्बन्धी विचारों में परिवर्तन -

स्वतंत्रता के बाद धार्मिक विश्वासों की जगह बुद्धिवाद का स्थान मिलने लगा है व्यवसाय, सामाजिक सम्पर्क तथा खान-पान सम्बन्धित पवित्रता और अपवित्रता सम्बन्धी व्यवहारों में परिवर्तन होने लगा है। पवित्रता का सम्बन्ध स्वास्थ्य और स्वच्छता के नियमों से हो जाने के कारण नयी मनोवृत्तियों का विकास हुआ है।

2. कर्मकाण्ड में परिवर्तन - आज लौकिकीकरण के कारण विभिन्न संस्कार, अनुष्ठानों, व्रतों एवं पुरोहित के व्यवहार के विधियों में परिवर्तन हुआ है अब समाज में विवाह एवं मृत्यु संस्कार दिखावापन रह गया है। पुरोहित की सहभागिता कर्मकाण्ड में कमी है। अब धार्मिक अनुष्ठान में, राजनीतिक और आर्थिक प्रभावशाली लोगों का महत्व दिया जा रहा है। तीर्थस्थान - मठ अब सब देखावा का भी प्रदर्शन का वस्तु रह गया है।

3. ब्राह्मण पुरोहितों की प्रस्थिति में परिवर्तन - अधिकांश ब्राह्मण अपने परम्परागत व्यवसाय को छोड़कर उन व्यवसायों के द्वारा आजीविका उपार्जित करने लगे हैं जिन्हें पहले केवल निम्न जातियों द्वारा ही किया जाता था। ब्राह्मण पुरोहित को आध्यात्मिक गुरु के रूप में न देखकर उन्हें सामान्य व्यक्ति मान गये हैं। पुरोहित वर्ग की परम्परागत प्रस्थितियाँ तार्किक व्यवहार के कारण नीचे गिरती जा रही है।

4. सामाजिक संरचना में परिवर्तन - लौकिकीकरण के कारण जहाँ जाति व्यवस्था के नियम एवं व्यवहार बदल गए हैं वहीं जजमानी प्रथा के विघटन से गाँव में राजनीतिक-आर्थिक विभेद बढ़ा है वहीं सामाजिक गतिशीलता के कारण संयुक्त परिवार सरल परिवार में बदल गया है। अर्थात् सामाजिक संरचना के तत्वों एवं स्वरूपों में लौकिकीकरण का प्रभाव देखने को मिलता है।

5. परम्परागत धार्मिक मान्यताओं में परिवर्तन - लौकिकीकरण के कारण धार्मिक कट्टरता एवं सामाजिक कुरीतियों परिवर्तन एवं विरोध बढ़ा है जैसे अब कानून के कारण

बहुपत्नी विवाह पर रोक लगा है वहीं विधवाओं की पुनर्विवाह का कानूनी अधिकार दिया गया है। अब ~~समलक~~ लड़का-लड़की स्वेच्छा से प्रेम विवाह कर रहे हैं। परिवार में कर्ता की निरंकुशता एवं स्त्रियों की अमानवीय शोषण पर कानून का हस्तक्षेप बढ़ा है।

अतएव, भारतीय समाज की संरचना एवं परम्परागत सांस्कृतिक विशेषताओं में लौकिकीकरण का प्रभाव देखने मिलता है। लौकिकीकरण के कारण धर्म में सुधार एवं अन्धविश्वासों का प्रभाव घटा है।